Answers to RSPL/3 (DS1)

खंड–क

1. (क) गद्यांश में सच्चे इंसान की यह पहचान बताई गई है कि उसमें संवेदनशीलता, परोपकार, त्याग, क्षमाशीलता जैसे उदात्त गुण होते हैं और यही गुण उसके अंदर से पशुता को मिटाकर मनुष्यत्व की भावना जाग्रत करते हैं, जिससे वह सच्चा इंसान बन जाता है।

(ख) जब तक किसी इंसान में मानवता के लिए सेवा की भावना नहीं है, जब तक उसके अंदर उदात्त गुणों का समावेश नहीं है, तब तक उसमें और पशु में बहुत बड़ा अंतर नहीं है।

(ग) स्वहित की दुर्भावना के कारण व्यक्ति छल-कपट, लोभ, ईर्ष्या से ग्रस्त होकर मानवीय आचरण से दूर होने लगता है, किंतु जब मानवता को मन में धारण करने से स्वहित जैसा पशुवत व्यवहार नष्ट हो जाता है, तब इंसान के व्यक्तित्व में वैराट्यता का भाव दिखाई देता है।

(घ) महापुरुषों के जीवन से हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्', सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' एवं 'परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीड़नम्' जैसी सीख ग्रहण करनी चाहिए। इससे हमारे व्यक्तित्व में वैश्विकता, सबके लिए कल्याण की भावना तथा परोपकार जैसे उदात्त गुणों का समावेश होगा और हम मानवता के पथ पर चलकर अपने जीवन को सार्थक बना सकेंगे।

(ङ) मानवता के उत्थान एवं दैत्य वृत्रासुर के संहार के लिए महर्षि दधीचि ने सहर्ष अपनी अस्थियों का दान किया, जिससे बने वज्र की सहायता से इंद्र ने वृत्रासुर का वध किया।

(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'उदात्त गुण एवं विराट व्यक्तित्व' (इसी भाव पर अन्य शीर्षक भी स्वीकार्य)

खंड–ख

2. यह रोहन की पुस्तक है। वाक्य के रेखांकित अंश को पद कहेंगे क्योंकि यहाँ इसे व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग कर लिया गया है।
3. (क) साहसी व मेहनती होने के कारण रमन कठिन परिस्थितियों से भी टक्कर ले लेता है।

(ख) पानी की निकासी सही नहीं है इसलिए वर्षा होने के बाद सड़कें **तालाब** बन जाती हैं।

(ग) मैंने बाज़ार जाकर कुछ पुस्तकें खरीदीं।

4. (क) महाविभूति– महान है जो विभूति (कर्मधारय समास)
   मदांध– मद में अंधा/मद से अंधा (अधिकरण तत्पुरुष समास/करण तत्पुरुष समास) (केवल तत्पुरुष भी स्वीकार्य)

(ख) साधु और संत– साधु-संत (द्वंद्व समास)
   जीवन भर– आजीवन (अव्ययीभाव समास)

5. (क) यहाँ गाय का ताज़ा दूध मिलता है।

(ख) आप कब तक यहाँ खड़े रहेंगे?/तुम कब तक यहाँ खड़े रहोगे?

(ग) वह रविवार को यहाँ आ सकता है।

(घ) ये पंक्तियाँ तुलसीदास जी की हैं।/यह पंक्ति तुलसीदास जी की है।

6. (क) जब तक व्यक्ति माँ-बाप के पैसों पर मौज करता है, तब तक उसे **आटे-दाल का भाव मालूम** नहीं पड़ता।

(ख) उसके साथ साझे पर व्यापार मत शुरू करना क्योंकि उसके अंदर बेईमानी **कूट-कूटकर** भरी है।

(ग) विराट को आउट करना **ऐरे-गैरे, नत्थू खैरे** बॉलर के वश की बात नहीं है।

(घ) हमारे सैनिक घुसपैठियों व आतंकवादियों का **काम तमाम** कर देते हैं।

खंड–ग

7. (क) 'डायरी का एक पन्ना' पाठ में कलकत्तावासियों ने अपने ऊपर लगे कलंक को धोने के लिए 26 जनवरी, 1931 के दिन को बड़ी धूमधाम व पूरे उत्साह के साथ मनाने का निर्णय लिया। पुलिस कमिश्नर के नोटिस को नज़रअंदाज़ करते हुए उन्होंने कौंसिल (काउन्सिल) के आह्वान पर जुलूस में बढ़-चढ़कर भाग लिया। पुलिस की लाठियाँ भी उनके बुलंद हौसलों को नहीं तोड़ सकीं और घायल होने के बावजूद वे जुलूस को आगे बढ़ाते रहे। वे मोनुमेंट (मोन्युमेंट) पर झंडा फहराने में सफल हुए और अपने जज़्बे से यह सिद्ध कर दिया कि कलकत्तावासियों के मनों में भी आज़ादी के प्रति चेतना है।

(ख) जापान में टी सेरेमनी में शामिल होकर लेखक ने स्वयं में अप्रत्याशित परिवर्तन अनुभव किया। उसे वहाँ के शांतिपूर्ण वातावरण में दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे कम होती महसूस हुई। इससे उसे मानसिक शांति मिली। उसे यह भी लगने लगा कि सत्य केवल वर्तमान है। भूतकाल की खट्टी-मीठी यादें तनाव देती हैं। भविष्य कैसा होगा, इसका पहले से अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इस कारण व्यक्ति को केवल वर्तमान में निष्ठापूर्वक जीना चाहिए। इस प्रकार इस दो घूँट चाय ने उसे जीवन जीने की कला सिखा दी।

(ग) बढ़ती आबादी के कारण पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की गई है। इसके परिणामस्वरूप प्रदूषण बढ़ने के साथ-साथ पशु-पक्षियों के रहने के ठिकाने भी छिन गए हैं। बेमौसम बरसात, बाढ़, भूकंप, सूखा, तूफान और नित नई बीमारियाँ इसी प्राकृतिक असंतुलन के परिणाम हैं। अतः यह कहा जा सकता है, "नेचर की सहनशक्ति की भी एक सीमा होती है"।

(घ) 'कारतूस' नामक पाठ के अनुसार, सवार स्वयं वज़ीर अली था। वह कर्नल से एकांत में इसलिए बात करना चाहता था क्योंकि कारतूस लेने के साथ-साथ वह कर्नल के मन में अपना खौफ़ पैदा करना चाहता था। एकांत पाते ही उसने कर्नल से पूछा कि वह वहाँ खेमा लगाकर क्यों बैठा है। उसने यह भी साफ़ कह दिया कि वज़ीर अली को पकड़ना बहुत मुश्किल है। जब कारतूस माँगने पर कर्नल ने कारतूस दे दिए तो वज़ीर अली ने उसे अपना परिचय दिया और कहा कि कारतूस देने के कारण वह उसकी जान बख़्श कर जा रहा है।

8. 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर व्यवहारवादी लोग अपने लाभ की बात सोचते हैं। उन्हें समाज से कोई लेना-देना नहीं होता। इस लाभ की मानसिकता के कारण कई बार वे समाज में उन्नति करते हुए भी दिखाई देते हैं, जबकि आदर्शवादी लोग अपने से अधिक समाज का ध्यान रखते हैं। वे परहित में ही जीवन बिताना चाहते हैं। समाज का हित उनके लिए सर्वोपरि होता है। यही कारण है कि ऐसे लोग भौतिक उन्नति में व्यवहारवादी लोगों से पीछे रह जाते हैं। स्वाभाविक है, समाज को साथ ले चलने की भावना के कारण आदर्शवादी लोगों का योगदान समाज के लिए सबसे अधिक होता है, व्यवहारवादी लोग तो सदैव समाज को पीछे धकेलते हैं।

अथवा

बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। रहने योग्य भूमि की कमी को दूर करने के लिए मनुष्य ने समुद्र को पीछे धकेलना शुरू कर दिया तथा पेड़ों को अंधाधुंध तरीके से काटना, शुरू कर दिया। उसने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया। प्रकृति में सभी प्राणियों और वस्तुओं की हिस्सेदारी थी, किंतु मनुष्य ने अपने बुद्धिजीवी होने का दुरुपयोग करते हुए पूरी धरती में अपनी हिस्सेदारी बना ली। इससे पर्यावरण असंतुलन की स्थिति आ गई, मौसम चक्र अव्यवस्थित हो गया, गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ने लगी, बेवक्त की बरसातें होने लगीं, ज़लज़ले, सैलाब तथा तूफ़ान आकर हाहाकार मचाने लगे तथा नित्य नई-नई बीमारियाँ धरती पर बढ़ने लगीं।

9. (क) तोप के ऊपर सैलानियों के बच्चों का घुड़सवारी करना तथा गौरैयों का उसके भीतर घुस जाना यह सिद्ध करता है कि अत्याचारी चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसके अत्याचारों का अंत अवश्य हो जाता है और फिर वह लाचार और बेबस बनकर रह जाता है। कविता में भी कभी बेहद ज़बर रही तोप अंत में एक दर्शनीय वस्तु बनकर रह गई।

(ख) नायक नायिका से नैनों के संकेत से मिलने के लिए कहता है। इस पर नायिका नैनों से ही मना कर देती है। नायिका के मना करने की भाव-भंगिमा पर नायक और भी मुग्ध हो जाता है। इस पर नायिका खीझ जाती है। थोड़ी देर के लिए दोनों के नयन नहीं मिलते, इससे उनके दिल उदास हो जाते हैं, किंतु कुछ देर बाद फिर नज़रें मिलती हैं। इससे उनके उदास मन फिर खिल उठते हैं। इस प्रकार 'कहत, नटत..... बात' दोहे में नायक-नायिका घरवालों की उपस्थिति में संकेतों की भाषा में ही सारी बात कर लेते हैं।

(ग) अपने आचरण को निर्मल बनाने के लिए कबीर ने निंदक को निकट रखने की सलाह दी है क्योंकि वह बिना साबुन और पानी के हमारे स्वभाव को निर्मल बनाता है। निंदक की निंदा सुनकर हम अपने दोषों को दूर करने का प्रयास करेंगे, जिससे हमारा स्वभाव निर्मल हो जाएगा।

(घ) 'भू' पर अंबर के टूट पड़ने का अर्थ है—'बादलों द्वारा धरती पर आक्रमण करना' अर्थात मूसलाधार वर्षा होना। पर्वतीय अंचल में अचानक बादलों के घिरने से पर्वत अदृश्य हो गए। केवल झरनों का शोर शेष रह गया। पृथ्वी और आकाश एक हो गए। ऐसे में अचानक तेज वर्षा के होने से ऐसा लगता है मानों धरती पर आसमान टूट पड़ा हो।

10. चरागाह में पशु केवल खुद ही चर लेना चाहता है अर्थात् वह केवल अपने ही हित के बारे में सोचता है, इसलिए केवल अपनी ही भलाई के बारे में सोचने को 'पशु प्रवृत्ति' कहा गया है। इस प्रवृत्ति के मनुष्य में आ जाने से उसके अंदर परोपकार, भाईचारा, एकता, त्याग, बलिदान जैसे उदात्त भाव नहीं रह जाते और वह समाज में रहते हुए भी समाज के लिए कोई कार्य नहीं करता। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिए समाज को नुकसान पहुँचाने में भी संकोच नहीं करता। इस प्रकार पशु-प्रवृत्ति के विकसित होने से मानवता को बहुत हानियाँ होती हैं।

अथवा

सामान्य रूप में हर कोई ईश्वर से यही प्रार्थना करता है कि ईश्वर उसे जीवन की विपदाओं से बचा लें तथा जो भी समस्याएँ उसके जीवन में आएँ वे ईश्वर ही दूर कर दें। ऐसी प्रार्थना स्वयं अकर्मण्य बने रहने की भावना को उजागर करती हैं। ऐसी प्रार्थना में व्यक्ति सबकुछ ईश्वर के सहारे छोड़कर स्वयं हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहना चाहता है। इसके विपरीत 'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं करता है कि प्रभु उसे जीवन की विपदाओं से आकर बचाएँ और जब विपरीत परिस्थितियाँ हों तब प्रभु किसी सहायक को भेजकर उसकी रक्षा करें, बल्कि इन विपरीत क्षणों में वह स्वयं जूझने के लिए प्रभु से निर्भयता, शक्ति, स्वास्थ्य व संयम आदि माँगता है। इन गुणों के द्वारा वह जीवन में कठिन परिस्थितियों से खुद दो-दो हाथ करने का आकांक्षी है। इन उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध होता है कि 'आत्मत्राण' कविता में कवि अकर्मण्यता से कर्मण्यता की ओर ले जाने का आह्वान कर रहे हैं।

11. (क) धन की अंधी दौड़ में बेतहाशा भागती दुनिया में लोग रिश्ते-नातों के स्थान पर धन को अधिक महत्त्व दे रहे हैं। भौतिकवादी मानसिकता के कारण लोग अपने आप में सिमटते जा रहे हैं, उन्हें सामाजिकता से कोई लेना-देना नहीं रह गया है। वे सोचते हैं कि इस भौतिकवादी युग में पैसों के बल पर वे अधिक से अधिक सुख प्राप्त कर सकते हैं। उनकी इसी सोच ने उन्हें रिश्ते-नातों व अपनेपन से दूर कर दिया है। इस धन केंद्रित मानसिकता के कारण अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। इस दूषित मानसिकता के कारण आज जीवन का सच्चा सुख मानव जीवन से दूर चला गया है। सुख के भौतिक साधनों के बीच अकेलापन लगातार बढ़ता जा रहा है। लोग पैसे की अंधी दौड़ में आपाधापी भरा जीवन जी रहे हैं, जिससे मानसिक तनाव बढ़ रहा है।

(ख) 'टोपी शुक्ला' कहानी में इफ़्फ़न और टोपी की मित्रता आज के समाज को सांप्रदायिक सौहार्द की सीख दे सकती है। ऐसी मित्रता कट्टरता को मिटाकर मनों में उदारता भर सकती है। शिक्षा ने देश के हालात पहले से बेहतर बनाए हैं। लोग धर्म की संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर जीवन जीने लगे हैं, किंतु समाज में अब भी कट्टरवादी लोगों की कमी नहीं है। यदि ऐसी मित्रता की कहानियाँ समाज में साक्षात रूप में दिखने लगेंगी, तो लोगों की कट्टर मानसिकता भी कम होगी और वे यह बात समझ सकेंगे कि सभी धर्मों से ऊपर मानव धर्म है।

खंड–घ

12. (क) **कन्या भ्रूण हत्या : कारण और निवारण**

कन्या भ्रूण हत्या जैसी बुराई भारतीय समाज का कलंक है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' जैसे आदर्शों का शंखनाद करने वाले पूजित भारतीय परिवेश में कन्याएँ जिस सम्मान व स्नेह की अधिकारी हैं, वह उन्हें आज तक प्राप्त नहीं हुआ है। आज जब देश चाँद पर पहुँचने के साथ-साथ मंगल ग्रह पर भी अपनी दस्तक दे चुका है, तब कन्या भ्रूण हत्या जैसे कुकृत्य को अंजाम देना यही दर्शाता है कि हम आज भी लकीर के फ़कीर बने हुए हैं और हम आज भी पुत्र को ही वंश चलाने के लिए आवश्यक मानते हैं। प्रतिवर्ष न जाने कितनी बेटियाँ कोख में ही कत्ल कर दी जाती हैं। इस जघन्य कृत्य के पीछे बहुत से कारण हैं, जिनमें प्रमुख कारण हैं–दकियानूसी मानसिकता, अशिक्षा, मूँछ नीची हो जाने का भय, निर्धनता, एक की जगह दो या अधिक पुत्रों की अभिलाषा, कानून का भय न होना आदि। कई राज्यों में स्थिति इतनी भयावह है कि कन्या के जन्म लेने के बाद उसकी इतनी उपेक्षा की जाती है या इतनी प्रताड़ना दी जाती है कि वह कुछ ही घंटों या दिनों में दम तोड़ देती है इसके निवारण के लिए भारतीयों को कन्याओं के प्रति अपनी दकियानूसी सोच को पूरी तरह बदलना होगा और बेटा-बेटी में अंतर करने की भावना को छोड़ना होगा, साथ ही सरकार को भी इस विषय में जागरूकता अभियान चलाने के साथ-साथ कठोर कानून बनाना होगा और कन्या-भ्रूण हत्या जैसे कृत्य में लिप्त लोगों व डॉक्टरों को कठोर से कठोर दंड दिलवाना होगा।

(ख) **कामकाजी महिलाएँ और उनकी दोहरी भूमिका**

आज का युग वैज्ञानिक एवं शैक्षिक प्रगति का युग है। परंपरागत रूढ़िवादी सोच के टूटने और नारी-शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने देश में महिलाओं की प्रगति के ग्राफ़ को नई ऊँचाइयाँ दी हैं। आज की नारी जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। अब उसकी भूमिका केवल संतानोत्पत्ति, उनके पालन-पोषण व भोजन बनाने तक सीमित नहीं रह गई है। आधुनिक नारी पढ़-लिख कर जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही है। वह ऑफ़िस, शॉप, फ़ैक्ट्री, स्कूल, कॉलेज, खेल के मैदान, सेना अंतरिक्ष आदि हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। आज उस पर जहाँ अपने घर की ज़िम्मेदारियाँ हैं, वहीं उसके कार्यक्षेत्र के उत्तरदायित्व भी हैं। इस दोहरी भूमिका के निर्वाह में उसके आगे कड़ी चुनौतियाँ खड़ी हैं। वह अगर आठ घंटे अपने कार्यक्षेत्र में बिताती है, तो घर में आकर भी थोड़ा बहुत काम उसे करना ही पड़ता है। माँ, पत्नी, बेटी की भूमिका में भी उसे खरा उतरना पड़ता है। ऐसे में कामकाजी महिला की भूमिका एक सामान्य नारी की अपेक्षा कई गुना बढ़ जाती है। वह न तो अपने कार्यक्षेत्र की उपेक्षा कर सकती है और न ही अपने घर-परिवार की। ऐसे में जहाँ घर के सदस्य उसे सहयोग करते हैं, वहाँ तो उसे दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ता, किंतु जहाँ परिवार का सहयोग नगण्य होता है, वहाँ उसे बहुत संघर्ष करना पड़ता है। कई जगह तो घर के अन्य सदस्यों की नासमझी के कारण उसे घर या ऑफ़िस में से किसी एक को चुनने की धमकी तक मिलने लगती है। ऐसे समय में नारी को बड़े ही धैर्य, आत्मबल, साहस, त्याग आदि का परिचय देना पड़ता है। पारिवारिक विघटन, घर के सदस्यों की उपोक्षा आदि के थोड़े-बहुत अपवादों को अगर छोड़ दें, तो यह कहने में ज़रा भी संदेह नहीं कि आज की नारी ने अपनी दोहरी भूमिका के लिए अपने आप को तैयार कर लिया है और महँगाई और ऊँची अपेक्षाओं के इस युग में वह भी घर की आर्थिक ज़रूरतों को पूरा करने में अपना योगदान दे रही है।

(ग) **संघर्ष ही जीवन है**

जगदीश गुप्त जी ने कितना सही कहा है–'सच हम नहीं सच तुम नहीं, सच है महज़ संघर्ष ही।' वास्तव में, जीवन का सबसे बड़ा सत्य संघर्ष ही है और जो भी इस सत्य के महत्त्व से परिचित हो जाता है, उसे उसके गंतव्य तक पहुँचने से कोई भी नहीं रोक पाता। नदी राहों में मिलने वाली चट्टानों से टकराकर अपना पथ बनाती है और अपनी इसी संघर्षशीलता के बल पर वह अंततः सागर से मिल पाती है और तेज़ हवा, भीषण गर्मी, हाड़ कँपाती सर्दी, मूसलाधार वर्षा को अडिग होकर सहने वाले पौधे ही वृक्ष बनकर धरती का संरक्षण कर पाते हैं। संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाता। संघर्ष लक्ष्य-प्राप्ति के लिए एक संपूर्ण मंत्र है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने इस दिव्य गुण को अपने जीवन में अपनाया, तभी तो वे अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सके। संघर्ष स्वयं ही प्रेरणा है और स्वयं ही आत्मबल। इसमें वह शक्ति निहित होती है, जिसके द्वारा असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। जो व्यक्ति संघर्षशील होता है, जीवन की कठिनाइयाँ उससे दूर भागती हैं क्योंकि वे जानती है कि ऐसा व्यक्ति उन्हें मुँह तोड़ जवाब देगा, सामान्य आदमी के समान उनके आगे घुटने नहीं टेकेगा। अतः जीवन के एक-एक पल को जी भर के जीने के लिए व्यक्ति को संघर्षशील होना ही चाहिए।

13. परीक्षा भवन

अ ब स स्कूल

क ख ग नगर

दिनांक– ... /... /...

सेवा में

श्रीमान संपादक

दैनिक प्रहरी

अ ब स नगर

विषय : बसों की कमी से होने वाली परेशानियों के संदर्भ में।

महोदय,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके समाचारपत्र का एक नियमित एवं जागरूक पाठक हूँ तथा आपके समाचापत्र के माध्यम से अ ब स नगर क्षेत्र में बसों की कमी से होने वाली परेशानियों की ओर प्रशासन एवं संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि हमारे नगर की आबादी लगभग डेढ़ लाख के करीब होगी, जिसके लिए तीन बसें दी गई हैं। अतः बसों की इतनी कम संख्या से लोगों को बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बसों की कमी से लोग समय पर कार्यालय नहीं पहुँच पा रहे हैं। लोगों को कैब बुक करके गतंव्य तक पहुँचना पड़ता है। इनकी कमी से नगर में प्राइवेट बस संचालक, ऑटो रिक्शा चालक लोगों से मनमाने पैसे वसूलते हैं और अंधाधुध सवारियाँ भर लेते हैं। इस कमी के संदर्भ में स्थानीय परिवहन अधिकारी से कई बार शिकायत की गई, किंतु उन्होंने इस विषय को बहुत अधिक गंभीरता से नहीं लिया।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया इस संदर्भ में एक समाचार या लेख प्रकाशित करके प्रशासन एवं अधिकारियों का ध्यान क्षेत्र में बसों कमी से होने वाली परेशानियों की ओर आकर्षित करवाने का कष्ट करें। इस कार्य के लिए समस्त क्षेत्रवासी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

सचिव

जागरूक नागरिक मंच

अथवा

परीक्षा भवन

अ ब स स्कूल

क ख ग नगर

दिनांक– ... /... /...

सेवा में,

श्रीमान डाकपाल

मुख्य डाकघर, सेक्टर-12

अ ब स नगर

विषय : डाकिए द्वारा की जा रही लापरवाही के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके डाक क्षेत्र का एक जागरूक निवासी हूँ तथा आपका ध्यान अपने सेक्टर-12 के डाकिए द्वारा महत्त्वपूर्ण डाक, पार्सल आदि समय पर नहीं पहुँचाने से होने वाली समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि सेक्टर-12 का डाकिया अपने कार्य के प्रति बेहद उदासीन तथा झगड़ालू स्वभाव का है। वह डाक समय पर नहीं पहुँचाता है और निमंत्रण पत्र, राखी आदि के लिफ़ाफ़े तो वह बाँटता ही नहीं है। उसकी इस लापरवाही की जब उससे शिकायत करो, तो वह झगड़ा करने को तैयार हो जाता है। सुना है कि वह पास के ही गाँव का रहने वाला है और स्थानीय होने का रोब लोगों पर जमाता है। अन्य सेक्टरों के आधार कार्ड बाँटे जा चुके हैं, किंतु अभी तक हमारे सेक्टर में एक भी आधार कार्ड नहीं बाँटा गया है।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया इस डाकिए के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करके हम सेक्टरवासियों की डाक-संबंधी समस्याओं का समाधान करने का कष्ट करें। इस कार्य के लिए हम सब सेक्टरवासी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

क ख ग

14.

रेज़ीडेंट्स वैलफ़ेयर कमेटी, आश्रय अपार्टमेंट

सेक्टर-4, अ ब स नगर

आवश्यक सूचना

(स्वच्छ भारत अभियान)

दिनांक– 04.05.20xx

आश्रय अपार्टमेंट के सभी निवासियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 10.09.20xx दिन रविवार को सुबह 9 बजे से सायं 12 बजे तक अपार्टमेंट के आसपास के स्थानों को स्वच्छ करने तथा स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक बनाने के लिए एक अभियान चलाया जाएगा। इसके लिए सभी से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर इस स्वच्छ भारत अभियान में भागीदारी निभाएँ। इस अभियान में हमारे साथ ज़िलाधिकारी व अन्य अधिकारियों ने भी शामिल होने की स्वीकृति दे दी है।

धन्यवाद

निवेदक

अथवा

व्यापार मंडल, सेक्टर-20, क ख ग नगर

आवश्यक सूचना

(कवि सम्मेलन का आयोजन)

दिनांक– 15.10.20xx

सभी नगरवासियों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि दिनांक 20.10.20xx (रविवार) को होली मिलन के अवसर पर सेक्टर-20 स्थित सभागार में एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें देश के ख्यातिप्राप्त कविगण शामिल होंगे। इस कवि सम्मेलन में हास्य कवि सुरेंद्र शर्मा जी तथा महेंद्र अजनबी जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। अतः आपसे विनती है कि कृपया शाम 8 से रात्रि 11 बजे तक चलने वाले इस कार्यक्रम में पधारकर काव्य-रस में सराबोर होने का कष्ट करें।

सधन्यवार

निवेदक

अध्यक्ष

15. **तरुण** – यार अरुण, सुना है कि हमारे कुछ साथी सिगरेट पीने लगे हैं।

वरुण – हाँ यार, मुझे भी कल ही पता चला है।

तरुण – क्या इन्हें बिल्कुल भी यह अहसास नहीं है कि यह धूम्रपान इन्हें अंदर से खोखला कर देगा।

वरुण – यह संगति का असर है। मैंने इन्हें कुछ बिगड़े हुए लड़कों के साथ भी देखा था।

तरुण – (समर्थन करते हुए) तुम सही कह रहे हो वरुण। यह बिल्कुल उन लड़कों की संगति का प्रभाव है।

वरुण – हम उनसे बात करके उन्हें समझाते हैं।

तरुण – बिल्कुल सही कह रहे हो। वे हमारे बहुत पक्के मित्र हैं। हो सकता है कि हमारी बात मान जाएँ।

वरुण – चलो, कल उनसे बात करते हैं।

अथवा

मयूर – सुना है तुम्हारे पापा ने तुम्हें स्कूल के लिए गाड़ी खरीदकर दी है।

शौर्य – हाँ यार, आज मैं उसी से आया हूँ। तुम भी लौटते समय मेरे साथ चलना।

मयूर – मौर्य, सबसे पहले तो नई गाड़ी के लिए बधाई! लेकिन ज़रा बताओं कि अभी तुम्हारी उम्र कितनी है?

शौर्य – मेरी उम्र... साढ़े पंद्रह साल है, लेकिन तुम यह क्यों पूछ रहे हो?

मयूर – मैंने उम्र इसलिए पूछी है क्योंकि 18 वर्ष से पहले डी०एल० नहीं बनता और बिना डी०एल० के गाड़ी चलाना यातायात के नियमों का उल्लंघन है।

शौर्य – अरे यार, कोई नहीं पकड़ता और अगर किसी दिन पकड़ भी लिया तो ले-दे के छूट सकते हैं।

मयूर – तुम किस स्पीड में गाड़ी चलाते हो?

शौर्य – स्पीड में ही तो मज़ा है मेरे दोस्त। जब तक सुई 100 तक न पहुँचे तब तक गाड़ी चलाने में मज़ा ही नहीं आता।

मयूर – तुम निर्धारित गति सीमा से बहुत तेज़ गाड़ी चलाते हो। तुम्हारे पास लाइसेंस भी नहीं है। तुम सीट बैल्ट भी नहीं बाँधते होंगे। क्या तुमने अभी कल कार दुर्घटना के बारे में नहीं पढ़ा कि कैसे एक नाबालिग ने गाड़ी मज़दूरों पर चढ़ा दी।

शौर्य – (डरते हुए) यार मुझे यह बात नहीं पता थी। तुम बिल्कुल सही कह रहे हो। मैं अब स्कूल बस से ही विद्यालय आऊँगा। राह दिखाने के लिए धन्यवाद।

मयूर – धन्यवाद तुम्हारा भी क्योंकि तुमने मेरी बात मानी।

16.

शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी नाम

मयूर इंटरनेशनल स्कूल, अ ब स नगर

(सीबीएसई बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त)

नवीन सत्र के लिए पंजीकरण प्रारंभ है। **जल्दी करें!**

विशेषताएँ–

- दसवीं व बारहवीं की परीक्षा में शत-प्रतिशत परिणाम।
- राष्ट्रस्तरीय खेल व अन्य प्रतियोगिताओं में उच्चस्तरीय प्रदर्शन।
- विज्ञान, कॉमर्स व कला तीनों वर्गों में विविध विषयों का अनुभवी अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षण।
- निर्धन, किंतु मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की सुविधा।
- कंप्यूटर एवं स्मार्ट क्लास की सुविधा।

अथवा

अजनबी लोगों पर यात्रा के दौरान भरोसा न करें
यह आपके और आपके परिवार के लिए ख़तरे की घंटी हो सकता है
किसी अजनबी से प्रसाद भी न लें, उसमें ज़हर हो सकता है
और आप ज़हरखुरानी गिरोह के शिकार बन सकते हैं
तो आइए, प्रण करते हैं कि
सजग रहेंगे, सुरक्षित रहेंगे

पुलिस विभाग, अ ब स नगर द्वारा जनहित में जारी